डॉ. व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम.ए. पीएच्.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
सातारा.

"प्रमाणपत्र"

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. निलेश रामचंद्र वायदंडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध मुद्राराक्षस के पशुप्रतीक नाटकों का अनुशीलन (तेंदुआ, तिलचट्टा के विशेष संदर्भ में) मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। श्री. निलेश रामचंद्र वायदंडे के प्रस्तुत शोध कार्य से मैं संतुष्ट हूँ ।

वाई.

(डॉ. व्यंकटेश वामन कोटबागे)

दिनांक – २९।६।९९

शोध–निर्देशक

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते है कि श्री.निलेश रामचंद्र वायदंडे का एम्.फिल.(हिंदी) का लघु शोध प्रबंध मुद्राराक्षस के पशु प्रतीक नाटकों का अनुशीलन (तेंदुआ, तिलचट्टा के विशेष संदर्भ में) परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रा.डॉ.भरत धोंडीराम सगरे

हिंदी विभाग अध्यक्ष,

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय,

सातारा.

L.B.S. College Satara

प्राचार्य प्रा.बी.बी.सावंत

प्राचार्य,

लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज,

सातारा.

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय

सातारा.

प्रख्यापन

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे संशोधन का विषय मुद्राराक्षस के पशु प्रतीक नाटकों का अनुशीलन (तेंदुआ, तिलचट्टा के विशेष संदर्भ में) सर्वथा मौलिक है। यह रचना इसके पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

(निलेश रामचंद्र वायदंडे)

शोध–छात्र

सातारा –

दिनांक : २७।६।९९

भूमिका

मैने नाट्य साहित्य का अध्ययन बी.ए. तथा एम.ए. के उपाधि के लिए किया था। एम्.फिल. में आने के बाद इसी विधा का अध्ययन करने का मौका मिला। नाट्य साहित्य का अध्ययन करते समय असंगत नाटक ने आकर्षित कर लिया। यद्यपि यह नाटक पाश्चात्य साहित्य में बैकेट, आयनेस्को आदि द्वारा वहाँ की जीवन को प्रस्तुत करने के लिए सामने आया। बैकेट के वेटिंग फॉर गोदो को 1969 में नोबेल पुरस्कार मिला और इस नाट्य परंपरा को पूरे विश्व में समर्थन प्राप्त हुआ।

इस असंगत नाटक की परंपरा हिंदी में भुवनेश्वर प्रसाद के बाद अग्रवाल, मणिमधुकर इस परंपरा में नाटक लिखते हुय दिखायी देती है। इनके अलावा, लक्ष्मीकांत वर्मा, काशिनाथ सिंह, सत्यव्रत सिन्हा, ब्रजमोहन शाह, रमेश बक्षी, आदि आते हैं। मुद्राराक्षस का नाम इन्हीं में लिया जाता है। आपके मरजीवा, योर्स फेथफुली, तिलचट्टा, तेंदुआ नाटकों के माध्यम से जीवन कि विभिन्न असंगतियों को प्रस्तुत किया है। स्त्री–पुरूष संबंध, अधिकारी वर्ग की पाशविकता, शासन व्यवस्था का खोखलापन, विघटित होते हुए जीवन मूल्य, आदि पर आपने व्यंग्य प्रस्तुत किये हैं।

मैंने मुद्राराक्षस के केवल दो (पशु प्रतीक) नाटक-तेंदुआ और तिलचट्टा का अध्ययन किया है। और इसमें लेखक ने इन प्रतीकों के माध्यम से मानवीय जीवन की असंगतियों को रेखांकित किया है। इस अध्ययन में असंगत क्या है? उसकी पाश्चात्य नाट्य साहित्य की परंपरा और हिंदी साहित्य में यह परंपरा कैसे विकसित हुई है इसका विवेचन करने का प्रयास किया है। साथ ही इन नाटकों के शिल्प पर भी विचार प्रस्तुत करते हुए उपसंहार में मैंने अपने निष्कर्ष दिये हैं।

मैंने यह लघु शोध प्रबंध मेरे वंदनीय गुरूवर्य श्रीयुत डॉ.व्यंकटेश वामन कोटबागे की प्रेरणा और मार्गदर्शन में पूरा किया है। आपके समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण मैंने आज हिंदी के असंगत नाटककार के साहित्य पर अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न किया है। मैं अपने गुरू के चरणों पर नतमस्तक हूँ । हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में गुरूवर्य डॉ.गजानन सुर्वेजी, गुरूवर्य प्राचार्य श्री.बी.बी.सावंत, प्रा.जयवंत जाधवजी, प्रा.डॉ.भरत धोंडीराम सगरे, अध्यक्ष हिंदी विभाग, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा प्रा.खैरून्नीसा खान, प्रा.डॉ.छायादेवी घोरपडे इन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

श्री.नीतिन गणपतराव साळुंखे (प्रबंधकर्ता) शाहूपुरी नागरी सहकारी बँक लि. शाहूपुरी सातारा, इन्होंने मुझे यह काम पूरा करने के लिए प्रोत्साहन देते हुये भी अवकाश उपलब्ध कराया इसलिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ ।

इसके अतिरिक्त श्री.अशोक शिंदे, विजय मांडके, कीर्ति साळुंखे, उदय पाटणे, सौ.संगीता निकम, धनंजय पाटणे, प्रदिप चव्हाण, सौ.अंजली पालेकर, कु.मीना शिंदे, अंकुश भिंगारदेवे, विजय बडेकर, अख्तर शेख, उमेश ठोंबरे, सुजाता सुधीर तुपे, राहुल पवार, सुधाकर राजपुरे, संदिप डांगरे, सुनिल फडतरे, विश्वनाथ अवघडे, महेश शिंदे आदि ने इस शोध कार्य में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायता की है। इन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे शोधकार्य में अधिक प्रोत्साहित करने वालों में मेरे पूज्य पिताजी श्री.रामचंद्र बाबुराव वायदंडे, और माँ विजया रामचंद्र वायदंडे के आशीर्वचन प्रस्तुत शोधकार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुये। मेरे भाई योगेश और राजेश ने भी मेरी मदद की ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के कार्य में हमारे महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.एस.ई.जगताप, तथा अन्य कर्मचारी, श्री.एस.एन.हावळ, ग्रंथपाल, किसन वीर महाविद्यालय, वाई, तथा उन विद्वान लेखकों का कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रंथ यह लघु शोध प्रबंध तैयार करने में सहायक हुए हैं।

अन्त में यह लघु शोध प्रबंध कम समय में टंकन–लेखन करनेवाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवलेजी और उनके सहाय्यक श्री.राजू कुलकर्णी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

(निलेश रामचंद्र वायदंडे)